"स्वच्छ" अभियान
रोज़गार से जुड़े ख़तरों का समाधान

हाल ही में किए एक सर्वे से पता चला है कि हमारे देश की कुल 12% महिलाएं माहवारी के दौरान सेनिटरी नैपकिन का इस्तेमाल करती हैं। देश की जनसंख्या के अनुपात में देखें तो इसके मायने हैं कि हर महीने 36 करोड़ औरतें इन सेनिटरी नैपकिनों को इस्तेमाल कर रही हैं। हमारी सरकार कम कीमत पर मिलने वाले नैपकिन बनाने की योजना पर विचार कर रही है। इससे औरतों को माहवारी के दिनों में स्वस्थ और साफ़ नैपकिन मिल पाएंगे जो लम्बे दौर में उनके स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है। पर विडम्बना यह है कि कूड़े में फेंके जाने वाले गंदे और इस्तेमाल किए गये नैपकिन कचरा बीनने वाली महिलाओं के स्वास्थ्य पर अपना बुरा प्रभाव डालते हैं। यह एक ऐसी समस्या है जिसकी तरफ़ किसी का भी कोई ध्यान नहीं जाता।

अगर हम 15 वर्ष से 54 वर्ष के बीच की महिलाओं की बात करें तो हर महीने हमें 432 करोड़ गंदे सेनिटरी नैपकिनों के सुरक्षित निपटान की व्यवस्था करनी होगी। अक्सर देखा गया है कि महिलाएं गंदे पैड अखबार में लपेटकर कूड़े या खुले मैदानों में फेंक देती हैं। कई बार पैड को शौचालय में भी फ्लश कर दिया जाता है जिससे सीवर लाइने ब्लॉक हो जाती है।

हमारे देश में माहवारी के दौरान ज़्यादातर औरतें कपड़ा इस्तेमाल करती हैं। कुछ औरतों पारम्परिक तरीक़े जैसे लकड़ी का बुरादा या नरम पत्तों के रेशों की घास भी उपयोग करती हैं। इनमें से कई साधन तकलीफ़देय और स्वास्थ्य के नज़रिए से हानिकारक भी साबित होते हैं। इन ख़तरों को देखते हुए सरकार ने कम क़ीमत वाले पैड बनाने के प्रयासों पर ज़ोर दिया है। पर इसके साथ-साथ हमें उन लोगों के स्वास्थ्य और सफ़ाई का भी ध्यान रखना होगा जो इस कचरे को उठाने का काम करते हैं। हमारे लिए माहवारी में सुरक्षा और सफ़ाई के अलावा इन सेनिटरी पैड को ठीक तरह फेंकने का मुद्दा भी अहम होना चाहिए। पुणे में कचरा बीनने का काम करने वालों का एक सहकारी समूह "स्वच्छ" इस समस्या को संबोधित करने के लिए एक आसान और कम कीमत वाला 'एसटी बैग' तैयार किया है जिसके उपयोग से रोज़गार संबंधी इस स्वास्थ्य समस्या का समाधान पाया जा सकता है।

कुछ समूहों जिनमें महिला व विकास समूह भी शामिल हैं का मानना है कि सुरक्षित माहवारी व स्वास्थ्य समस्याओं से निपटने के लिए औरतों को सेनिटरी पैड का उपयोग करना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक स्वयंसवी संगठन नर्म सस्ते कपड़े के और आरामदायक पैड का प्रचार कर रहे हैं।

इन सैनिटरी नैपकिनों को धोया जा सकता है जिससे ये पर्यावरण पर नुकसानदायक असर नहीं डालते। इनकी तुलना में प्लास्टिक या फाइबर से बनाए जाने वाले पैड पर्यावरण को अधिक नुकसान पहुंचाते हैं। परन्तु समस्या यह है कि कपड़े से बने पैड को धोने के लिए साबुन पानी

ज़रूरी है जो अक्सर आसानी से नहीं मिल पाता। सार्वजनिक नलों पर भी औरतें इन्हें धो नहीं सकतीं। संक्रमण से बचने के लिए इन्हें धूप में सुखाना भी बेहद ज़रूरी होता है। इन सभी समस्याओं को देखते हुए ज़्यादातर महिलाएं बाज़ार में बिकने वाले पैड का ही इस्तेमाल करती हैं।

पुणे में कार्यरत *स्वच्छ* संगठन की जानकारी के अनुसार कचरा बीनने वाला समूह पहले से ही स्वास्थ्य के नज़रिए से अरक्षित होता है। *विश्व स्वास्थ्य संगठन* ने मुंबई के एक खुले कूड़े यार्ड सर्वे से यह साबित हो चुका है कि वहां काम करने वाले कर्मचारियों में से 80% को आंखों की बीमारी, 73% को सांस की तकलीफ़, 51% को पेट संबंधी समस्या व 40% को चर्म रोग है।

इसी तरह कोलकाता में काम करने वाले कचरा कर्मचारियों में 32% को किसी न किसी रूप में संक्रमित पाया गया है। सर्वे से यह भी स्पष्ट हुआ है कि कचरा छांटते समय अक्सर इन कर्मचारियों के हाथे कूड़े में मौजूद कांच या धातु की पैनी चीज़ों से कट जाते हैं। इन खुले जख़्मों से गंदे पैड उठाने से संक्रमण का खतरा दुगना हो जाता है। शोध से यह भी पता चला है कि हैपिटाइटिस ए और बी के कीटाणु खून से भरी चीज़ों में काफ़ी लम्बे समय तक पनप सकते हैं और कटी-फटी खाल के ज़रिए शरीर में प्रवेश कर सकते हैं।

स्वच्छ सहकारी संगठन ने इन सभी समस्याओं के निदान के लिए पुराने अखबार से 'एसटी बैग' बनाये हैं। एक रुपये प्रति बैग की कीमत पर मिलने वाला इस लिफ़ाफ़े पर एक खास निशान भी है जिससे इसे कूड़े के ढेर में आसानी से पहचाना जा सके। इन लिफ़ाफ़ों को *स्वच्छ* समूह की बुजुर्ग कचरा बीनने वाली महिलाएं पुणे शहर में बेचती हैं। कर्मचारियों का मानना है कि इस लिफ़ाफ़े में बंद करके गंदे पैड फेंकने से वे उसे अलग से एक जगह छांट कर इकट्ठा कर सकती हैं जिससे उनके स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभाव काफ़ी हद तक कम किए जा सकते हैं।

इन लिफ़ाफ़ों को बेचने के लिए *स्वच्छ* ने एक कमीशन आधारित अभियान भी चलाया है। इस कार्यक्रम के तहत महीने के लगभग दस हज़ार लिफ़ाफ़े बेचे जाते हैं।

पुणे की एक नागरिक का कहना है कि स्वच्छ बैग के इस्तेमाल से उन्हें घर के कूड़े में पैड फेंकने में आसानी होती है। उन्हें इस बात की ग्लानि भी नहीं होती कि किसी दूसरी महिला को उस गंदे पैड को अपने हाथों से उठाना पड़ता है। दूसरी और *स्वच्छ* में काम करने वाली औरतों का मानना है कि संक्रमण और बीमारी से बचने के साथ-साथ

कुछ कड़वी सच्चाइयां

***गूंज संस्था* के आंकड़ों से कुछ कड़वी सच्चाईयां उजागर होती हैं। भारत में ज़्यादातर औरतों के पास माहवारी में इस्तेमाल करने के लिए साफ़ कपड़ा नहीं होता। इसलिए ग़रीब तबकों की औरतें गंदे, चिथड़े तक माहवारी के दौरान इस्तेमाल करती हैं। राजस्थान के कुछ इलाकों में राख, मिट्टी इस्तेमाल की जाती है। उत्तरांचल व बिहार के दुर्गम इलाकों में अनेक बार माहवारी में कुछ भी इस्तेमाल नहीं करती। बंगाल के सुन्दरवन क्षेत्र में औरतें एक कपड़े को साल-दो साल इस्तेमाल करती हैं।**

माहवारी के दौरान सफ़ाई, साधन, शौचालयों की कमी या गैर मौजूदगी के कारण बड़ी संख्या में किशोरियां पढ़ाई छोड़ देती हैं।

इन सब कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए *गूंज* ने साफ़, पुराने कपड़ों से पैड बनाने की अगुवाई की है। *गूंज* के कार्यकर्ता शहरी व ग्रामीण इलाकों से इस्तेमाल किए हुए कपड़े जैसी चादर, दुपट्टा, तौलिया, साड़ी इकट्ठा करते है। इन कपड़ों को पैड में तब्दील किया जाता है। *गूंज* का यह कार्यक्रम भारत के 21 राज्यों के दूर-दराज़ गांवों में चल रहा है।

उन्हें गरिमा के साथ काम करने का भी अहसास होता है। वे कहती हैं, 'हम भी इंसान है किसी दूसरे की गंदगी छूने में हमें भी तकलीफ़ होती है'।

आजकल बाज़ार में बिकने वाले सेनिटरी नैपकिन क्लोरीन से ब्लीच की गई लकड़ी या रुई के गूदे से बनाए जाते हैं। इस सतह को पतला और अधिक सोखने वाला बनाने के लिए इसमें एक पॉलिएक्रिलेट जैल डाला जाता है। पैड का कवर भी पॉलिप्रापलीन से बनाया जाता है कहने का अर्थ यह है कि पैड का 90% हिस्सा कच्चे तेल से बने प्लास्टिक से बनता है। ये सभी पदार्थ प्राकृतिक रूप से नष्ट नहीं होते और न ही इनको दोबारा इस्तेमाल किया जा सकता है।

औरतों के स्वास्थ्य के नज़रिए से देखें तो साफ़ कपड़े या सस्ते पैड की उपलब्धि न होने से उन्हें अनेक तरह के संक्रमणों शर्म और तकलीफ़ों का सामना करना पड़ता है। दूसरी और बाज़ार से खरीदने की क्षमता रखने वाली औरतों द्वारा पैड को सही तरह फेंकने के प्रति बेरूखी या गैर ज़िम्मेदारी अनेक कचरा बीनने वाली महिलाओं और हाथ से कूड़ा छांटने वाले पुरुष कर्मचारियों के लिए भी रोग, अपमान और तकलीफ़ पैदा करते हैं। इन दोनों ही महत्वपूर्ण सच्चाइयों पर ध्यान देकर हम सभी के लिए सुरक्षित, रोगमुक्त और गरिमामय ज़िंदगी की ओर कदम बढ़ा सकते है। आगे चुनौतियां बहुत सी हैं पर एक साथ मिलकर इस समस्या को काफ़ी हद तक कम किया जा सकता है।